एक किशोरी की डायरी : एक परख

सत्यनारायण,
हिसार, हरियाणा

अने फ्रैंक की इस डायरी में १२ जून १९४२ से लेकर ०१ अगस्त १९४४ तक की प्रविष्टियाँ दर्ज हैं। अने फ्रैंक का जन्म १२ जून १९२९ को हुआ था और मृत्यु सोलहवें जन्म दिन से तीन माह पूर्व हुई थी। मूलतः यह डायरी डच भाषा में थी और स्वयं अने फ्रैंक के लिए थी। लेकिन ''१९४४ में एक दिन निर्वासित डच सरकार ने एक दिन, प्रतिनिधि गैरिटअ बोल्कश्टाइन ने लंदन से एक रेडियो प्रसारण में घोषणा की कि उन्हें उम्मीद है कि युद्ध के बाद वे जर्मन कब्जे के दौरान डच लोगों की पीड़ा के आँखों देखे विवरण जुटा सकेंगे, जिनको सार्वजनिक भी किया जा सकेगा। यह घोषणा अने फ्रैंक की अपनत्व की शब्दावली को सार्वजनिक कर गई।''[१] डायरी के अध्ययन से पता चलता है कि अने फ्रैंक ने अपने डायरी में अंतिम बार कलम १ अगस्त १९४४ को चलाई थी। अब तक अने फ्रैक अपने परिवार के सदस्यों के साथ अज्ञातवास व्यतीत कर रही थी। यह अज्ञातवास भय और डर के वातावरण से सरोबार था। बर्बर नात्सियों का भय एवं बाहर की दुनिया आतुरता के द्वंद्व से जूझती अने फ्रैंक अपनी शब्दावली से अपने भाव को व्यक्त करना चाहती है। इसके साथ वह सब कुछ चाहती है जो एक किशोरी चाहती है। ''मुझे उम्मीद है कि मैं हर बात तुम्हें बात सकूंगी, क्योंकि मैने अपनी बातें कभी किसी से नहीं की और मैं आशा करती हूँ कि तुम मेरे लिए सुकून और सम्बल का बड़ा स्रोत बनोगी। और मैं कितनी खुश ूँ कि तुम्हें यहाँ अपने साथ ले आयी। इस तरह डायरी लिखना कितना अच्छा है, अब मुझसे इन लम्हों का इंतजार नहीं हो पाता, जब मैं लिखने की स्थिति में होती हूँ । डायरी से कुशल श्रोता और कोई नहीं होता, यह सब कुछ सह लेता हैं, इतना तक शलीलता और अश्लीलता पर भी प्रश्न नहीं उठाता। यह अलग बात है कि डायरी कभी सिलसिलेवार नहीं लिखी जाती।''[२]

इसका सीधा सा कारण यह होता है कि यह व्यक्तिगत और निजी होती है। कभी अधूरे वाक्य, कभी अधूरे अनुच्छेद डायरी लेखन की महत्वपूर्ण विशेषता है। डायरी में कुछ भी एक रेखीय नहीं होता। साहित्य की बात की जाए तो भाषा पर सबसे पहले ध्यान जाता है क्योंकि भाषा जीवन और समाज के समूचे क्रिया व्यापार, यहाँ समाज में प्रकृति भी निहित है, के बीज से उत्पन्न होती है और लेखक के अनुभव की अनेक रूपता के साथ उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों का सूक्ष्म अवलोकन कर लेखक के अनुभव को साहित्य में परिवर्तित कर भावाभिव्यक्ति करती है परन्तु डायरी में यह नहीं होती। डायरी मौलिक तो होती है परन्तु कलात्मक नहीं होती। इसलिए किसी भी लेखक की डायरी से उसके लेखक व्यक्त्वि का आँकना बेहद कठिन होता है। इस बात से सभी सहमत हैं कि जीवन पल-पल परिवर्तितत होता और मानवीय अनुभव एवं आदर्श जीवन की वास्तविकता से एक पल में धराशायी हो जाते हैं। वक्त के सामने प्रत्येक व्यक्तित्व कितनी बार टूटता-बिखरता और सबक लेता है। यह सब उबड़-खाबड़ सिलसिला चलता और अधिक खुशी और गमी व्यक्ति को डायरी तक खींच लाती है। मेरा उद्देश्य डायरी विद्या का विश्लेषण करना नहीं हैं, मैं तो केवल अने फ्रैक की डायरी में दर्ज भय से आशावाद होने की बात कर रहा हूँ। एक किशोरी अज्ञातवास में एक बार भयभीत है परन्तु भय पर विजय पाकर वह अन्तः

आशावादी बन जाती है , यह महत्व की बात है। ''अन्ततः मैं आशावादी हो गई हूँ, अन्ततः सब कुछ मनोनुकूल हो रहा है। समचुच बड़ी खबर है।''[३]

''क्या तुम मेरी इन बातों को समझ सकती हो या मैं विषय बदलूं? मैं इस मामले में तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती। तार्किक रूप से अक्टूबर से मेरे स्कूल जाते के लक्षण लग रहे हैं, जिस कारण मैं काफी खुश हूँ। मैं पूर्वानुमान नहीं करना चाहती। यह बहुत बड़ी बात है, ''दुख आदमी को माँझता है, यह बहुत बड़े लेखक की बात है परन्तु किशोरी की जीजिविषा सराहनीय है।''''१९४० के बाद अच्छे दिन गिने चुने रह गए थे'', पहले युद्ध फिर समर्पण, फिर जर्मनों का आगमन, इसी के साथ यहुदियों के लिए मुसीबतें शुरू हो गई। यह एक अनै फ्रैंक की बात नहीं थी। प्रत्येक यहुदी की स्वतंत्रता बाधित थी। इतना ही नहीं यह एक विचित्र अनुभव प्रत्येक उस यहुदी के लिए जो वहाँ जीवन जी रहा था। वहाँ पर किसी भी यहूदी का जीवन चिंता विहीन नहीं था। हर हिटलर विरोधी प्रताड़ना का दुख झेल रहे थे। १९३८ का सामूहिक नरसंहार इस जीवन का उदाहरण था। लेखिका परिवार में किशोरवय में थी। वस्तुतः वह अपनी कल्पना की दोस्त किन्नी के साथ अपने कटु अनुभव डायरी में दर्ज करती है। शायद उसकी कोई सुनता नहीं था। तुम्हें शायद और आश्चर्य हो परन्तु यहुदियों से यह अपेक्षा की जाती है किवह कोई ऐसा काम नहीं करेगा जिसकी उसको मनाही है। यूं कहिए कि यह दौर जुल्म का दौर था। इस जुल्म के चलते अने के पिता १९३३ में हॉलैंड टहते चले गए। काफी समय वहां रहे परन्तु आखिरकार वापिस तो आना ही था। इतना गहरा अनुभव करने वाली संवदेनशील अने फ्रैंक की विवश्ता डायरी लेखन इसलिए बन गई कि उसको कोई सुनने वाला नहीं था। ''आज से पहले, ईमानदारी से बताऊ, तो मेरा डायरी लिखने का समय नहीं था। अब अज्ञातवास में विवशता का यह दौर शुरू हो गया। ''रविवार की सुबह लग रहा था कि जैसे बरसों बीत किए। इतना कुछ हो चुका है जैसे दूनिया अचानक उपर से पलट गई है। ''लेकिन देख सकती हो कि मैं जिन्दा हूँ, ठीक है, लेकिन कहाँ और कैसे तुम शायद एक शब्द न समझ पाओ, लेकिन सत्य यही है।''[८] बहुत सीमित सामान एक बड़ा और छोटा थैला, कुछ कपड़े रख कंघी और कुछ कागज बस इतना ही, यह पता भी नहीं कि कितने दिन रहना पड़ेगा। यह तय था कि १६ जुलाई को अज्ञातवास में छिपते चले जाना है। छिपने का स्थन कौन सा होगा, यह पिता जी का दफ्तर होगा। यह अंधकार भय माल गोदाम की तर्ज पर बनार होगा। यह बिल्कुल सुन्न होगा। यहाँ सब लोग एक साथ रहेंगे। न जाने कब तक और कितने दिन। परन्तु यह अनुभव भयावह होगा। कितना भयावह होगा कहना मुश्किल है।

''बाहर न जाने का मुझे कितना दुख है, यह मैं कह नहीं सकती और मैं इस बात को लेकर भयभीत भी हूँ। एक दिन हमारे इस गुप्त ठिकाने को ढूंढ लिया जाएगा और हमें गोली मार दी जाएगी। जिसकी जाहिर हैं, सम्भावना कम हो।''[९]

बहुत लोग जानते है कि हिटलर का व्यवहार यहूदियों के साथ कैसा था। मैंने इस बात को कई बार डायरी के माध्यम से पाठक को बताती है। वह भयभीत है कि उसके दुख से उके पिता टूट ना जाए। अक्सर आज के किशोर अपने को आत्ममुग्ध बनाते हुए अपने माता पिता को कम ही महत्व देते हैं, वे हकीकत से दूर जा कर अपने को उदासीन बना लेते है और तनावग्रस्त हो जाते है। अने इस कारण से सभी किशोरों के लिए प्रेरणा का आधार है। वह मौत से जूझने का मादा रखती है और मरने से पूर्व जीना चाहती है। वह जिंदादिल बनी रहती है। वह जानती है कि मम्मी उससे बहुत प्रेम करती है परन्तु वह मम्मी से नाराज है क्योंकि मम्मी उसको बच्ची समझती है। ''मम्मी मुझे हमेशा बच्ची समझती है, जो मैं बर्दाशत नहीं कर सकती। बाकि सब ठीक ठाक है। मुझे मम्मी ने आज भयानक उपदेश दिया। हमारी सोच हर चीज में एक दूसरे से उल्टी है, डैडी अच्छे हैं, वे मुझसे प्रतिकूल भी हो जाते हैं लेकिन यह पांच मिनट से ज्यादा नहीं चलता।'' अने निजी काल्पनिक नहीं है। वह केवल डायरी तक ही सीमित नहीं है, उसकी दिनचर्या में वह सब शामिल है जो सबकी दिनचर्या में

शामिल हैं शुरू जब १६ जुलाई को वे अज्ञातवास में चले जाते हैं तो वह कई दिन डायरी को हाथ नहीं लगाती और महीने भर डायरी को छोड़े रखती है। ''मैं कभी-कभी लंदन से डच भाषा का प्रसारण सुनती हूं। राजकुमार बर्नहर्ड ने हाल में ही घोषणा कीहै कि राजकुमारी जुलियाना को जनवरी में बच्चा होने वाला है, यह मुझे बड़ा अच्छा लगा, यहां कोई नहीं समझता कि राजपरिवार में मेरी दिनचस्पी क्यों हैं?'' यह दिलचस्पी की वजह उसकी राजनीतिक परिस्थितियों के साथ सत्ता परिवर्तन की ओर संकेत भी है।

किशोर तो किशोर होते हैं। अने के बारें में कच्ची उम्र पक्की समझ वाली कही जा सकती है। वह इस तथ्य से परिचित थी कि जिस अज्ञातवास में वह जी रही है, वह चिंतनशील आयाम और खुद को हद से आगे ... सकने की क्षमता को जाग्रत करने वाला है। वह यह जानती थी कि ऐसे अज्ञातवास को झेलने के लिए प्रेरणा भीतर से जुटानी पड़ती है। यदि आप ऐसा कर रहे हैं जिसका आपमें जुनून हो तो वह जुनून निश्चित आपको दिशा देगा। यह दिशा अने को अज्ञातवास के दौरान मिली थी है।

''पापा चाहते है कि मैं हैब्बेल और अन्य कुछ लेखकों (प्रसिद्ध जर्मन लेखक) की पुस्तकें पढ़ूँ। अब मै। जर्मन काफी अच्छी तरह पढ़ लेती हूँ, सिवाय इसके कि मैं बुदबुदाकर पढ़ती हूं, बजाय चुपचाप अपने आप के पढ़ने के। लेकिन यह ठीक रहेगा।''[१२] इसी दौरान १९४२ आ जाता है और वह अपनी डायरी में लिखती है, ''इस तरह की बातें अब मैं और नहीं लिख पाऊंगी। अब मैं अपनी डायरी को ड़ेढ़ साल बाद दोबारा पढ़ रही हूँ, मुझे बचपन की मासूमपने पर आश्चर्य हो रहा है।''[१३] मैं अब और मासू नहीं बन सकती लेकिन परिवार की मर्यादा भी तो रखना मेरा कर्तव्य है।''[१३] मैंने अपनी माँ के बारें मे अभद्र लिखा, मुझे अपने लिखने पर शर्म है।''[१४]

संदर्भ सूची

१. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से
२. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से
३. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से, पृ. ०७
४. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से, पृ. ०९
५. डा. सत्यनारायण डायरी विश्लेषण का अंश
६. डा. सत्यनारायण डायरी विश्लेषण का अंश
७. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से, पृ. २७
८. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से, पृ. २३
९. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से, पृ. २०२
१०. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से, पृ. ६८
११. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से, पृ. ७२
१२. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से, ७९
१३. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से, पृ. ८०
१४. एक किशोरी की डायरी, अने फ्रैंक भूमिका से, पृ. १२६